परम्परागत सामाजिक एवं पारिवारिक रीति–रिवाजों पर आधुनिकीकरण का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

(दरभंगा जिला के बहेड़ी प्रखंड के विशेष संदर्भ में)

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर,

दरभंगा के अन्तर्गत

समाजशास्त्र विषय में

पी–एच.डी. उपाधि हेतु उपस्थापित

शोध–प्रारूप

वर्ष–2023

29/2/24

पर्यवेक्षक

Anju Kumari
29/02/2024

शोधार्थी

अंजू कुमारी

वर्ग क्रमांक–03

PAT 2021-22

PAT Roll No.- 22190010

शोध–प्रारूप

समाजशास्त्र विभाग (सामाजिक विज्ञान संकाय)

ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

1. शीर्षक :

परम्परागत सामाजिक एवं पारिवारिक रीति–रिवाजों पर आधुनिकीकरण का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

(दरभंगा जिला के बहेड़ी प्रखंड के विशेष संदर्भ में)

2. अध्ययन विषय का विवरण :

किसी भी समाज या परिवार की अपनी रीति–रिवाज होती है। मगर अब प्राचीन काल से चली आ रही समृद्ध सामाजिक एवं पारिवारिक रीति–रिवाजों पर आधुनिकता के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता। आधुनिकीकरण का प्रभाव इस कदर हावी हो रहा है कि लोगों की पारंपरिक जीवनशैली, व्यवहार, विचार, आपसी सौहार्द्र तथा कई पारंपरिक उसूलों में बदलाव हो चुका है। शहरों से लेकर गांव, कस्बों तक शायद ही कोई क्षेत्र बचा हो जिस पर आधुनिकता का प्रभाव नहीं पड़ा हो। पारंपरिक रीति–रिवाज, त्योहार, पर्व, रहन–सहन, वेशभूषा से लेकर पारंपरिक शिक्षा पद्धति तक पर आधुनिकीकरण का प्रभाव देखने को मिलता है। पारंपरिक खानपान में गुणवत्तायुक्त देसी अनाजों की ज़गह विदेशी जंक व फास्ट फूड शामिल हो रहे हैं। विवाह समारोहों के पारंपरिक रीति–रिवाज, लोकगीत तथा कई स्थानीय भाषाएं एक खास दायरे में सिमट रहे हैं। यहाँ तक कि आधुनिकीकरण का प्रभाव धार्मिक मान्यताओं पर पड़ता दिखाई पड़ रहा है।

अधिकांशतः परम्परा एवं आधुनिकता को विपरीत विचार के रूप में देखा जाता है क्योंकि परम्परागत समाज एवं परिवार की एक निश्चित संरचना होती है

Anju Kumari
29/02/2024

और आधुनिक समाज एवं परिवार की संरचना उससे भिन्न है। योगेन्द्र सिंह (2014) ने कहा था कि यहाँ पर परम्परा एवं आधुनिकीकरण के एकीकरण की आवश्यकता है। प्रत्येक समाज एवं परिवार की अलग–अलग प्रकार की तार्किकता होती है, जैसे कि मूल्य प्राप्त करने एवं लक्ष्य प्राप्त करने की तार्किकता। पहली तार्किकता को व्यावहारिक तार्किकता कहा गया जबकि दूसरी को औपचारिक तार्किकता कहा गया। व्यावहारिक तार्किकता सरल समाज जैसे आदिम. या जनजातीय समाजों में पायी जाती थी, जिसमें मुद्रा की कोई अवधारणा नहीं थी अथवा मुद्रा विनिमय का कोई साधन नहीं था, जबकि औपचारिक तार्किकता में मुद्रा विनिमय महत्त्वपूर्ण रहा। इसलिए बाजार मानसिकता एवं लाभ–हानि की अवधारणा प्रबल रही। पारम्परिक समाज एवं परिवार में ये दोनों तार्किकता पायी गई। इसलिए भारतीय समाज एवं परिवार के परिप्रेक्ष्य में परम्परागत रीति–रिवाजों एवं आधुनिकता को विपरीत अवधारणा के रूप में नहीं देख सकते। विभिन्न समाजशास्त्रियों के परम्परागत रीति–रिवाजों एवं आधुनिकता के बारे में विचारों को निम्नलिखित रूप में विश्लेषित किया गया है।

परम्परा को सैद्धान्तिक रूप से निर्मित करना हमेशा एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा, जिसमें एक ओर परम्परा तथा दूसरी तरफ उससे भिन्न आधुनिकता के सम्बोधन को रखा जाता है। बीच में वे समाज एवं परिवार आते हैं, जो परम्परा एवं आधुनिकता के बीच दोनों की विशेषताओं से भिन्न–भिन्न अंशों में पाए जाते हैं। परन्तु यह दृष्टि सही नही है, क्योंकि कोई भी समाज एवं परिवार पूर्णतः न तो आधुनिक होता है और न परम्परागत। गिडेन्स (1984) का कहना है कि परम्पराएं पत्थर की लकीर नहीं होती। उनकी बराबर व्याख्या होती है, परिभाषा और नवीन परिभाषा होती है और अपनी इसी विशेषता के कारण परम्पराएं

Anju Kumari
29/02/2024

आधुनिक समाज एवं परिवार में भी जीवित रही हैं। अर्थात् कहा जा सकता है कि परम्परा का भी अपरम्पराकरण होता है लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि आधुनिक समाज एवं परिवार में परम्परा अपना सम्पूर्ण अस्तित्व खो देती है। हमारे धर्म, वर्ग और जाति की ऐसी परम्पराएँ हैं, जो आधुनिकता के कारण अधिक शक्तिशाली बना है।

जिन्सवर्ग (1921) ने परम्परा को एक संचार की प्रक्रिया के रूप में समझाते हुए कहा है कि जब मूल्यों, मान्यताओं, विश्वासों और आदतों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित किया जाता है तो वह स्थानान्तरण परम्परा ही होती है। उसमें भूतकाल के अनुभव निहित होते हैं और सामूहिक स्वीकृति भी।

सिंगर (1972) भारतीय संदर्भ में वृहत परम्परा का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि, यह परम्परा विद्यालय एवं मन्दिरों में पोषित होती है। यह परम्परा भारतीय समाज एवं परिवार के प्राचीन ग्रन्थों पर आधारित है जो कि ब्राह्मणों द्वारा रचित और पल्लवित परम्परा है।

मैरियट (1955) ने भारत की शास्त्रीय परम्परा के सन्दर्भ में दो प्रक्रियाओं का उल्लेख किया है– सार्वभौमीकरण एवं स्थानीयकरण। जब गाँवों की लोक परम्पराओं के तत्व शास्त्रीय परम्परा में मिल जाते हैं, तो उसे सार्वभौमीकरण कहा जाता है तथा जब शास्त्रीय परम्परा के कुछ तत्व निचले स्तर पर लघु परम्पराओं द्वारा ग्रहण कर लिए जाते हैं, तो वह 'स्थानीयकरण' कहलाता है।

परम्परा सामाजिक विरासत का वह अभौतिक पक्ष है, जो हमारे व्यवहार के स्वीकृत तरीकों का द्योतक है और जिसकी निरन्तरता पीढ़ी–दर–पीढ़ी

Anju Kumari
29/02/2024

हस्तान्तरण की प्रक्रिया द्वारा बनी रहती है। सिंह (2014) ने परम्परा की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है–

1. परम्परा का स्वरूप अमूर्त होता है, लेकिन इसका प्रभाव सामाजिक जीवन मे देखा या महसूस किया जा सकता है।
2. परम्परा एक सापेक्षिक अवधारणा है। जो एक समाज के लिए परम्परा है, वह दूसरे समाज के लिए भी परम्परा हो, यह जरूरी नहीं है।
3. परम्पराएं अभौतिक संस्कृति हैं, किन्तु इन पर आधारित जिन चीजों का निर्माण होता है उनका स्वरूप भौतिक भी हो सकता है।
4. परम्पराओं का विकास एवं परिवर्तन दोनों ही धीरे–धीरे होते हैं। परम्पराएं समय के साथ स्वतः बनती–बिगड़ती या परिवर्तित होती रहती हैं।
5. परम्पराएं सामाजिक विरासत हैं। इनके निर्माण में समस्त समाज की भूमिका होती है।
6. सामान्यतः परम्परा किसी योजना के तहत विकसित नहीं होतीं, बल्कि इनका विकास स्वाभाविक रूप से होता है। इनकी उत्पत्ति परिस्थिति जन्य सामाजिक व्यवहारों और आवश्यकताओं से होती है। अतः इनको सामाजिक वैधता प्राप्त होती है।
7. परम्परा समाज को स्थायित्व प्रदान करती है।
8. परम्परा समाज के सदस्यों के व्यवहारों को नियंत्रित करती है।

परम्परागत समाज में व्यक्ति व उसके समूह से सबंध आधुनिक समाज से भिन्न होते हैं। परंपराएं, रूढ़ियाँ व लोक जीवन, व्यक्ति को स्वयं प्रत्यक्षण व क्रिया का बोध कराते हैं। परस्पर घनिष्ठ संबंधों के आधार पर व्यक्ति सामंजस्यवादी व संतोषप्रद जीवन जीने के लिए अग्रसर होता है। धर्म, उत्तरदायित्व की भावना, आयु व लिंग के आधार पर अपेक्षा व सम्मान, परिवार

Anju Kumari
21/02/2024

समूह के प्रति निष्ठा, कर्तव्य भावना का समायोजन, व्यक्ति को विशिष्ट से सामाजिक बनाता है। व्यक्ति की दिनचर्या सुस्त व तनाव रहित होती है। व्यक्ति प्रदत्त व्यवस्था व विश्वासों के प्रति प्रतिकार नहीं करता है और न ही वह आकांक्षाओं के बल पर अधिक पाने की इच्छा ही करता है। स्वाभाविक रूप से उसकी रुचि इस विश्व से अलग अन्य विश्व में भी रहती है, जो कि अनेक अनुष्ठानों, कर्मकाण्डों, रीति–रिवाजों व धार्मिक संस्कारों के माध्यम से अपने को दूसरे विश्व व सर्वोच्च शक्ति से जोडने का प्रयास करता है। ऐसे समाज में व्यक्ति का व्यक्तित्व, उसकी क्रियाओं, भूमिकाओं एवं मान्यताओं का स्वरूप भिन्न होता है।

मार्क्स, वेबर तथा दुर्खीम आदि ने भी आधुनिकता तथा आधुनिक समाज की बात की है। यद्यपि उन्होंने आधुनिकता की कोई परिभाषा नही दी है परन्तु उनकी अवधारणाओं एवं सिद्धान्तों में इसकी स्पष्ट झलक मिलती है। मार्क्स ने आधुनिकता की व्याख्या पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के माध्यम से की है। उनके अनुसार, अधिक से अधिक उत्पादन करना ही आधुनिकता है अर्थात् आधुनिकता कुछ और न होकर पण्यीकरण है। वेबर आधुनिकता की व्याख्या बुद्धिसंगतता के आधार पर करते हैं। वे आधुनिकता का केन्द्रीय तत्व विवेक अथवा युक्तिमूलकता को मानते हैं। दुर्खीम के अनुसार अधिकतम स्तरीकरण ही आधुनिकता है। अर्थात् परम्परागत समाज में न्यूनतम स्तरीकरण और आधुनिक समाज में अधिकतम स्तरीकरण। अतः स्पष्ट है कि मार्क्स आधुनिकता को पण्यीकरण कहते हैं, वहीं वेबर इसे युक्तिमूलक मानते हैं और दुर्खीम स्तरीकरण के सन्दर्भ में आधुनिकता को परिभाषित करते हैं।

पारसंस आधुनिकता को मूल्यों की गठरी मानते हैं अर्थात् समाज में संरचनात्मक विभेदीकरण जितना अधिक होगा, वह समाज उतना अधिक

Anju Kumari
29/02/2024

आधुनिक होगा। उन्होंने आधुनिकता की परिभाषा पैटर्न वैरिएबल के सन्दर्भ में की है। आधुनिक समाज एवं परिवार में भावात्मक तटस्थता, विशिष्टता, सर्वव्यापकता, उपलब्धि तथा सामूहिकता आदि मूल्य पाए जाते हैं।

अहमद (1990) ने आधुनिकीकरण की समीक्षा करके उसके अलग–अलग आयामों की चर्चा की है–

अ) आधुनिकतावाद एक वैचारिकी रूप में– आधुनिकता हेतु आधुनिकतावाद को एक वैचारिकी के रूप में मानना चाहिए, जिसमें चार विचार प्रमुख हैं–

(1) धर्मशास्त्र एवं तत्वमीमांसा के प्रति तार्किक एवं कारणात्मक प्रवृत्ति– आधुनिकतावाद एक तार्किक एवं धर्मनिरपेक्ष शब्द है। इसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी का मिश्रण है। ये धर्म के लिए एक शक्तिशाली चुनौती है।

(2) भाग्यवादिता के विचार का खण्डन करना तथा यह मानना कि मनुष्य अपना भाग्य खुद बनाता है न कि इसमें किसी अदृश्य, चमत्कारी, दैवीय अथवा प्राकृतिक शक्ति का हाथ है।

(3) मनुष्य की स्वतन्त्रता में अटूट विश्वास करना, विशेषतः यौन सम्बन्ध, शिक्षा, विवाह, व्यवसाय, धर्म, जीवनशैली में स्वतन्त्रता।

(4) सामाजिक एवं राजनीतिक सुधार पर बल देना आदि।

ब) आधुनिकता हासिल करने की प्रेरणाएँ– किसी भी समाज एवं परिवार को आधुनिकीकृत करने हेतु पाँच प्रेरणादायी कारक होते हैं– 1. आर्थिक विकास एवं भौतिक प्रगति की इच्छा, 2. किसी एक वैचारिकी का प्रभाव, 3. राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त करने की भावना, 4. आधुनिक समाज के साथ सम्पर्क अथवा सम्बन्ध रखना, 5 मनुष्य की सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु पारम्परिक साधनों की असफलता।

Amar Kumari
29/02/2024

स) आधुनिकता की विशेषताएँ– मैक्लीलैड, लर्नर, एलेक्स इकल्स, गुन्नार मिर्डरल, योगेन्द्र सिंह आदि विचारकों के विचार के आधार पर आधुनिकता की कुछ विशेषताएँ हैं जो निम्नलिखित है– 1. तार्किक मनोवृत्ति, 2. धर्मनिरपेक्ष विश्व दर्शन/ दृष्टि, 3. परिवर्तन एवं प्रगति की इच्छा, 4. नवाचारिता एवं उपलब्धि–उन्मुखता, 5. परानुभूति एवं दूसरों के कल्याण की इच्छा, 6. अप्रतिबन्धित सामाजिक गतिशीलता, 7. उच्च स्तरीय सामाजिक गत्यात्मकता, 8. सक्रिय सहभागिता एवं सहयोग, 9. वैश्वीकरण एवं महानगरीयवाद, 10. प्रकार्यात्मक विभिन्नता एवं विशिष्टीकरण, 11. संचार का स्वतः प्रवाह एवं मूल्यों का प्रसार, 12. समानता और सार्वभौमिकता।

योगेन्द्र सिंह (2014) के अनुसार आधुनिकीकरण एक एकीकरण की प्रक्रिया है जिसमें कुछ पश्चिमी तत्त्व एवं कुछ अन्य देशों के तत्त्वों को भी अपनाया जाता है जिससे भारतीय संस्कृति की अस्मिता बनी रहती है। इसके अलावा दुबे के विचार अल्पविकसित देशों के सन्दर्भ में यहाँ महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने कहा था कि इन देशों के लिए आधुनिकीकरण का अर्थ विकास के बराबर है और आधुनिकीकरण की तीन विशेषताएं हैं–

1. जीवन के न्यूनतम मानक को लाना एवं वो निरन्तर प्रगति हेतु ऊर्जा को कैप्चर करना।

2. जटिल संगठन को चलाने के लिए उससे सम्बन्धित सक्षमता।

3. जटिल संगठन का निर्माण एवं निरन्तरता के लिए व्यक्तित्व में आमूलचूल परिवर्तन और सामाजिक संरचना एवं मूल्यों में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता।

Anju Kumari
29/02/2024

आधुनिक व्यक्तित्व को बढ़ावा देने एवं विस्तार लाने हेतु व्यक्तिगत, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर संरचनात्मक संस्थागत मनोवृत्ति एवं मूल्यों में परिवर्तन लाना होगा। सिंह (2014) के अनुसार, आधुनिकता कोई वैचारिकी न होकर एक सांस्कृतिक सार्वभौमिकता है, जिसके लक्षण निम्नलिखित हैं–

1. आधुनिकता का दृष्टिकोण विवेकपूर्ण होता है, जिसमें समस्याओं का मूल्यांकन सार्वभौमिक संदर्भ में किया जाता है।

2. आधुनिकता में विज्ञान केन्द्र में होता है तथा तकनीकी तंत्र की भूमिका महत्वपूर्ण समझी जाती है।

3. आधुनिकता में मानवता निहित होती है।

4. आधुनिक मूल्यों के अन्तर्गत प्रजातन्त्र, समानता तथा धर्मनिरपेक्षता आदि को रखा जाता है। जब किसी समाज में नए मूल्यों का प्रवेश हो जाता है, तो इसे आधुनिकीकरण कहा जाता है।

गुप्ता (2000) के अनुसार, आधुनिकता वह है जिसमें मानवता का व्यवहार होता है तथा दूसरों के लिए आदर भाव होता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि आधुनिक समाज में सभी लोग समान होते हैं। उनमें अनेक प्रकार की गैर बराबरी होती है परन्तु एक आधारभूत बराबरी होती है, जिसके कारण लोग अपनी मान मर्यादा के साथ रह सकते हैं। उन्होंने आधुनिकता के निम्न लक्षण बताए हैं– (1) व्यक्ति की मान मर्यादा, (2) सार्वभौमिक मानकों का पालन, (3) व्यक्ति की उपलब्धि को ऊँचा मानना तथा (4) सार्वजनिक जीवन में जिम्मेदारी। हेबरमास (1986) का कहना है कि आधुनिकता एक अधूरा प्रोजेक्ट है जिसके लिए बहुत कुछ किया जाना बाकी है। उनके अनुसार, आधुनिक समाज में प्रजातन्त्र, पूजीवाद, सार्वजनिक क्षेत्र तथा बुद्धिसंगतता आदि तत्व पाए जाते हैं।

Anju Kumari
29/02/2024

आइजनस्टेड (1969) का कहना है कि आधुनिकता प्रौद्योगिक क्षेत्र से प्रारम्भ होकर राज़नैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में दिखाई पड़ती है और अन्त में सामाजिक क्षेत्र को प्रभावित करती है। आधुनिकीकरण पर्यावरण को प्रभावित करने वाला बहुत बड़ा कारक है।

ब्लेक (1966) आधुनिकता को एक मूल्य के रूप में परिभाषित करते हुए कहते हैं कि ये एक ऐसा मूल्य है जो वांछनीय होने के साथ ही सामाजिक परिवर्तन का संकेत है। उनका मानना है कि बदलती हुई प्रौद्योगिकी ने सामाजिक संरचना के स्वरूप और सामाजिक सम्बन्धों में अनुरूपी परिवर्तन किया है।

मूर (1963) के अनुसार, आधुनिकता की अवधारणा में लोकप्रिय प्रजातांत्रिक विचारधारा होती है जिसके अन्तर्गत परम्परागत शासकों की वैधता को अस्वीकार किया जाता है। आधुनिक समाज में साक्षरता और धर्म–निरपेक्ष शिक्षा के विस्तार को महत्व दिया जाता है। मूर ने आधुनिकता के कुछ तत्व बताए हैं जो इस प्रकार हैं– (1) साध्य–साधन तार्किक गणना, (2) सम्पत्ति, काम बचत, खतरे से सामना करने के प्रति नया दृष्टिकोण, (3) परिवर्तन की वांछनीयता और सम्भावना में निष्ठा, (4) सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक अनुशासन तथा (5) दीर्घकालीन एवं उच्चतर संतोष हेतु अल्पकालीन संतोष को स्थगित करने की क्षमता।

शरद कुमार (2014) आधुनिकता की अवधारणा के अन्तर्गत व्यक्तित्व की कुछ विशेषताओं को रखते हैं– नये विचारों की स्वीकृति, नई पद्धति का प्रयोग, अपना मत देने के लिए तैयार रहना, समय–बोध के प्रति जागरूक रहना, वर्तमान व भविष्य में अधिक रुचि रखना, समय की नियमितता का पालन करना, नियोजन व कार्य क्षमता के प्रति अधिक ध्यान देना, विश्व के प्रति अधिक

Anju Kumari
29/02/2024

व्यवहारिक दृष्टिकोण होना, विज्ञान व तकनीकी में विश्वास तथा न्याय के समान वितरण में विश्वास रखना।

रुडोल्फ व रुडोल्फ (1967) ने कहा कि परम्परा एवं आधुनिकता के प्रतिमानों में कुछ समस्याएं हैं परन्तु इनके मध्य भेद अनिवार्य है। उनका कहना है कि स्थानीय दृष्टिकोण, संवेगात्मक क्रियाएं, अपरिवर्तनशीलता, अतार्किकता, समूह की महत्ता, जन्म के आधार पर प्रस्थिति, भाग्यवादिता, उत्पादन के कार्य का परिवार, निवास और समुदाय से एकीकरण इत्यादि परम्परागत समाज के लक्षण हैं।

बनेडिस्क (2016) ने आधुनिकीकरण एवं आधुनिकता में अन्तर किया है। ये आधुनिकता को आधुनिकीकरण से अधिक व्यापक मानते है। इनके अनुसार आधुनिकीकरण एक ऐसी सभ्यता की ओर इशारा करता है, जिसमें साक्षरता तथा नगरीकरण का उच्च स्तर तथा लम्बवत् और भौगोलिक गतिशीलता, प्रति व्यक्ति उच्च आय और प्रारम्भिक स्तर से उच्च स्तर की अर्थव्यवस्था, जो कमी के स्तर के परे जा चुकी है, इत्यादि शामिल है। दूसरी ओर आधुनिकता एक ऐसी संस्कृति को बताती है, जिसकी विशेषता का निर्धारण तार्किकता, व्यापक रूप में उदार दृष्टिकोण, मतों की विविधता तथा निर्णय लेने के विभिन्न केन्द्र, अनुभव के विभिन्न क्षेत्रों की स्वायत्तता, धर्मनिरपेक्ष आचार शास्त्र तथा व्यक्ति के निजी संसार के प्रति आदर के रूप में होता है।

लर्नर (1958) आधुनिकीकरण में निहित विशेषताओं को शक्ति, तरुणाई, निपुणता तथा तार्किकता के रूप में स्वीकार करते हैं और इसे प्रगति की अपेक्षा वृद्धि की ओर झुकाव तथा परिवर्तन के अनुरूप अपने को ढालने की तत्परता के रूप में मानते हैं। इनके अनुसार आधुनिकीकरण द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में निम्नलिखित परिवर्तन होते हैं–

Anju Kumari
29/02/2024

1. आर्थिक क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का स्तर उच्च होता जाता है।

2. राजनीतिक क्षेत्र में शक्ति का प्रसार समूह में होता है। सभी वयस्कों को मताधिकार द्वारा शक्ति प्रदान कर संचार के साधनों द्वारा प्रजातंत्र में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है।

3. सांस्कृतिक क्षेत्र में भिन्न समाजों के साथ अनुकूलन में वृद्धि होती है, तथा दूसरे लोगों की परिस्थितियों के प्रति परानुभूति में वृद्धि होती है।

4. संरचना के क्षेत्र में सभी संगठनों के आकार में तथा उनमें जटिलता एवं विभेदीकरण की दृष्टि से वृद्धि होती है।

5. पारिस्थितिकीय क्षेत्र के अन्तर्गत नगरीकरण में वृद्धि होती है।

श्रीनिवास (1963) ने आधुनिकीकरण के विषय में विचार करते हुए कहा है, कि यह कोई तटस्थ शब्द नहीं है। अधिकांशतः इसका अर्थ अच्छाई से लिया जाता है। जब पश्चिमी देशों के प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्पर्क के कारण किसी गैर–पश्चिमी देश में परिवर्तन होता है, तो इसे आधुनिकीकरण कहते हैं। इन्होंने आधुनिकीकरण के अन्तर्गत नगरीकरण में वृद्धि, साक्षरता का प्रसार, प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि, वयस्क मताधिकार, तर्क का विकास आदि तत्वों को सम्मिलित किया है।

शाह (1971) आधुनिकीकरण को बहुआयामी प्रक्रिया मानते हैं, जो सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रों में व्याप्त है। शाह (1971) ने आधुनिकीकरण के अन्तर्गत निम्नलिखित क्षेत्रों का उल्लेख किया है–

(अ) वे आर्थिक क्षेत्र में आधुनिकीकरण को औद्योगीकरण में वृद्धि, उत्पादन में वृद्धि, अत्यधिक मशीनीकरण, शहरीकरण में तीव्रता, व्यक्तिगत व सामूहिक संपत्ति में अंतर रहने व कार्य के अलग–अलग स्थान, व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता,

Anju Kumari
29/02/2024

आय, खरीद व बचत तथा पूँजी लगाने की स्वतंत्रता, तर्क व गतिशीलता में वृद्धि, नये दृष्टिकोण का विकास आदि बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट करते हैं।

(ब) राजनीति के क्षेत्र में उन्होंने आधुनिकीकरण को धर्मनिरपेक्ष एवं कल्याणकारी राज्य की स्थापना, शिक्षा, स्वास्थ्य, मकान व रोजगार की राज्य संस्था द्वारा व्यवस्था, सभी व्यक्तियों में कानूनी समानता, सरकार चुनने तथा उसके संबंध में मत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आदि तत्वों के संदर्भ में स्पष्ट किया है।

(स) सामाजिक क्षेत्र में आधुनिकीकरण के अन्तर्गत संस्तरण की खुली व्यवस्था, अर्जित पदों की प्रधानता, समाज के सभी स्तर के व्यक्तियों को समान अवसर की प्राप्ति, विवाह, धर्म, परिवार तथा व्यवसाय के क्षेत्र में वैयक्तिकता आदि तत्वों को शामिल किया है।

(द) वैयक्तिक क्षेत्र में आधुनिकीकरण की विशेषताओं में परिवर्तन के लिए मानव प्रयत्नों पर बल दिया जाना, धर्मनिरपेक्ष, तार्किक, वैज्ञानिक और विश्वव्यापी दृष्टिकोण का विकास तथा सामाजिक, समानतावादी और स्वतंत्रात्मक दृष्टिकोण अपनाना आदि तत्व सम्मिलित किये गये हैं।

देसाई (1971) आधुनिकीकरण का प्रयोग सामाजिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं मानते बल्कि आधुनिकीकरण को जीवन के सभी पहलओं तक विस्तृत मानते हैं। वे बौद्धिक क्षेत्र में आधुनिकीकरण का तात्पर्य निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट करते है–

1. तर्कशक्ति में वृद्धि होना अर्थात भौतिक व सामाजिक घटनाओं के साथ ही पर्यावरणीय घटनाओं की तार्किक व्याख्या की जाती है।

2. धर्मनिरपेक्षता बढ़ती है।

वहीं सामाजिक क्षेत्र में आधुनिकीकरण का तात्पर्य देसाई (1971) ने निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया है–

1. सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि होती है अर्थात परंपरागत विश्वास, आर्थिक, राजनैतिक तथा मनोवैज्ञानिक धारणाओं को त्याग कर व्यक्ति नये मूल्यों एवं व्यवहार को अपनाने में अग्रसर होता है।

2. सामाजिक संरचना में परिवर्तन होता है अर्थात् व्यक्ति के परंपरागत कार्यों में परिवर्तन होता है तथा

3. प्रदत्त के स्थान पर अर्जित पदों को महत्व दिया जाता है।

देसाई (1971) ने सांस्कृतिक क्षेत्र में आधुनिकीकरण को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया है–

1. शिक्षा का विस्तार तथा विशेष प्रकार की शिक्षा देने वाली संस्थाओं में वृद्धि।

2. नये सांस्कृतिक दृष्टिकोण का विकास जो उन्नति, सुधार, योग्यता, सुख, अनुभव व क्षमता पर जोर दे।

3. सभी समाजों के साथ समायोजन की धारणा का विकास, रुचि का बढना, दूसरों का सम्मान, ज्ञान व तकनीकी में विश्वास पैदा होना तथा व्यक्ति को उसके कार्य का प्रतिफल मिलना और मानवतावाद के विश्वास में वृद्धि होती है।

4. समाज द्वारा ऐसी संस्थाओं और योग्यताओं का विकास करना जिससे लगातार परिवर्तित होती माँगों और समस्याओं से समायोजन किया जा सके।

इस प्रकार देसाई (1971) ने आधुनिकीकरण को एक विस्तृत क्षेत्र के सदर्भ में देखा है जिसमें समाज व परिवार के सभी पहलू आ जाते हैं। आधुनिकीकरण की उत्पत्ति जिस किसी भी संदर्भ में हुई हो, इसकी मूल आत्मा तार्किकता,

Anju Kumari
29/02/2024

वैज्ञानिक विश्वदृष्टि और उन्नत एवं परिष्कृत तकनीक से जुड़ी पायी गई है। अतः हम कह सकते हैं कि आधुनिकीकरण एक ऐसी अति व्यापक प्रक्रिया का संकेत है, जिसके द्वारा एक समाज एवं परिवार पारम्परिक या अविकसित संस्थाओं से विकासशील व्यवस्थाओं जैसे औद्योगीकरण, लौकिकीकरण, नगरीकरण, विशेषीकरण परिष्कृत एवं उन्नत संचार एवं यातायात व्यवस्था, आधुनिक शिक्षा की ओर अग्रसर होता है।

कॉनेल (1965) ने भी आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के तीन स्तरों का उल्लेख किया है–

1. विश्लेषणात्मक, तार्किक तथा आविष्कारक दृष्टिकोण।
2. यंत्रों तथा प्रविधियों का विस्तार।
3. सामाजिक ढाँचे में लचक।

स्पष्ट है कि आधुनिकीकरण राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक विकास की एक ऐसी मिली–जुली पारस्परिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा ऐतिहासिक तथा आधुनिक अविकसित समाज एवं परिवार आपने आपको विकसित करने में प्रयत्नशील है।

3. संबंधित साहित्य का अध्ययन

श्रीनिवास (1972) ने अपनी कृति ''कास्ट इन माडर्न इण्डिया एण्ड अदर एसेज'' में उल्लेख किया है कि परम्परागत समाज एवं परिवार में व्यक्ति अपने लिए नहीं बल्कि समूचे समाज एवं परिवार के बारे में सोचता था, वही उसका आदर्श था, पर आधुनिक भारत में व्यक्तिवादी आदर्श का बोलबाला है। आधुनिकीकरण ने भौतिकवादी को जन्म दिया है। आधुनिकीकरण ने परम्परागत

Anju Kumari
29/02/2024

जाति व्यवस्था, जजमानी व्यवस्था, वैवाहिक परम्परा आदि को पूर्णरूपेण परिवर्तित कर दिया है।

सुशील श्रीवास्तव (1990) ने "आधुनिक भारत पर बदलते राम" विषय पर अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि आधुनिक युग में लोगों के सोच के साथ–साथ परम्परागत समाज एवं परिवार की रीति–रिवाजों के स्वरूप में भी बदलाव हो रहे हैं। परम्परागत सामाजिक एवं धार्मिक विचारधाराएँ सिकुड़ते जा रहे हैं।

मुकुंद मिश्रा (2012) ने पश्चिम बंगाल के पुरूलिया जिला में लोक संस्कृति और आधुनिकीकरण पर गुणात्मक अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि, आधुनिकीकरण का समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और नियमों पर असीम प्रभाव परिलक्षित हो रहा है। आधुनिकीकरण ने सामाजिक एवं पारिवारिक परम्पराओं को परिवर्तित कर दिया है। अब लोगों में परम्परागत रीति–रिवाजों की मान्यताओं को दर किनार करते देखने को मिल रहा है। इतना ही नहीं लोक संस्कृति का अवमूल्यन भी होते जा रहे हैं।

एस. मिश्रा (2019) ने अपने शोध "भारत में आधुनिकीकरण का प्रभाव" में स्पष्ट किया है कि आधुनिकीकरण से उत्पन्न होने वाली मनोवृत्तियों के परिणामस्वरूप उन अन्धविश्वासों और कुरीतियों का प्रभाव तेजी से कम होने लगा जो सैकड़ों वर्षों से भारतीय सामाजिक जीवन को विघटित कर रही थीं। अस्पृश्यता, पर्दा प्रथा, बहुपत्नी विवाह तथा दहेज–प्रथा जैसी सामाजिक कमजोरियाँ क्षीण होती जा रही हैं।

सुनीता शुक्ला (2019) ने अपने अध्ययन "समाज पर आधुनिकीकरण का प्रभाव" में उल्लेख किया है कि आधुनिकीकरण के फलस्वरूप परिवारों के

Anju Kumari
29/02/2024

स्वरूपों में परिवर्तन को स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप संयुक्त परिवार परिवर्तित हो रहे हैं। आधुनिकीकरण के फलस्वरूप संकीर्ण विचारधारा में परिवर्तन हुआ है। आधुनिकीकरण के कारण मनुष्य प्रतियोगिता की अंधी दौड़ में आगे बढ़ रहा है, जहाँ व्यक्तिगत संबंध और रिश्ते पिछड़ रहे हैं। आधुनिकीकरण ने भौतिकता को बढ़ावा दिया है, अतः अधिकाधिक आवश्यकता पूर्ति ने नैतिकता का ह्रास किया है। आधुनिकीकरण उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ाया है।

4. अध्ययन का परिक्षेत्र एवं मुद्दा

वर्तमान भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में यदि आधुनिकीकरण को देखा जाय तो उदारीकरण के पश्चात् भारत में तीव्र गति से सामाजिक परिवर्तन हुए हैं। भारतीय समाज में भेदभाव के आधार पर आधारित जातिगत संस्तरीकरण में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। ग्रामीणों के मध्य शिक्षा के माध्यम से तार्किक मूल्यों का समावेश हो रहा है। लोग परम्परागत मूल्यों से किनारा करते हुए देखे जा सकते हैं। वर्तमान भारत में परंपरागत मान्यताओं व रिवाजों के खिलाफ नकारात्मक की भावना देखने को मिलती है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्तियों, समूहों एवं समाजों में विश्व के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण और परिप्रेक्ष्य का उदय हुआ है। ये नवीन परिप्रेक्ष्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उपलब्धियों से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं और इसके प्रसार ने परपंरागत समाजों की संरचना को प्रबल रूप से प्रभावित किया है। इसके परिणाम स्वरूप सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को तीव्रता मिली है और कल्याण व विकास जैसे क्षेत्रों में नवीन संभावनाएं सामने आयीं हैं। इस प्रक्रिया ने धर्म निरपेक्षीकरण, औद्योगीकरण और नगरीकरण को भी प्रोत्साहन दिया है और सुदृढता प्रदान की है। आधुनिकीकरण के प्रति प्रबल रूप में आकर्षित और प्रक्रिया से घनिष्ठ रूप

Anju Kumari
29/02/2024

से प्रभावित दिखाई दे रहे हैं। भारत की बहु – प्रजातीय, बहु – धार्मिक, बहु – सांस्कृतिक, बहु – भाषायी व बहु – क्षेत्रीय परिस्थितियों, समूहों और वर्गों में आधुनिकीकरण के प्रति स्वीकृति व ग्रहणशीलता पायी जाती है।

5. अध्ययन के उद्देश्य

(i) आधुनिकीकरण की अवधारणा का अवलोकन करना।

(ii) परम्परागत सामाजिक रीति–रिवाजों पर आधुनिकीकरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

(iii) आधुनिकीकरण का पारिवारिक रीति–रिवाज पर बढ़ते प्रभाव का अध्ययन करना।

(iv) आधुनिकीकरण का परम्परागत सामाजिक एवं पारिवारिक रीति–रिवाजों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6. परिकल्पना

(i) आधुनिकीकरण परिवर्तन का एक विशिष्ट स्वरूप है, इसमें सामाजिक संरचना, सामाजिक मूल्यों तथा व्यवहारों की प्रेरणाओं का रूप तार्किक व्यवहारों, सामाजिक समानता तथा गतिशीलता से जुड़ा होता है।

(ii) आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने वैज्ञानिक सोच के आगमन के बाद से मनुष्य के जीवन और मानव प्रथाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। मनुष्य सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सौंदर्य और आध्यात्मिक जीवन के क्षेत्रों में तर्क और व्यवहार के माध्यम से विचार और व्यवहार के नए दृष्टिकोणों को सामने ला रहा है।

(iii) आधुनिकीकरण का परिणाम यह है कि नए वर्गों का उदय हुआ है, साक्षरता में वृद्धि हुई है और लैंगिक समानता आई है।

Anju Kumari
29/02/2024

(iv) आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से संबंधित कुछ अन्य कारकों, जैसे—नगरीकरण, पश्चिमी शिक्षा, यातायात व संचार के विकसित साधनों आदि का गहरा प्रभाव भारतीय सामाजिक जीवन तथा परम्परागत तौर पर प्रभावशाली संस्थाओं पर पड़ा। इस प्रकार जाति, संयुक्त परिवार, विवाह, पंचायत आदि सभी में बड़े परिवर्तन हुए। जातीय संरचना एवं संस्तरण में परिवर्तन करने में संस्कृतिकरण की प्रक्रिया भी सहायक रही है, भले ही इसका प्रभाव सीमित रहा हो।

7. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

वर्तमान परिदृश्य में समाज को देखें तो पता चलता है कि युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति परम्परा को दिन–प्रतिदिन पीछे छोड़कर आगे आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल होती जा रही है। संस्कृति–संस्कार ऐसे अभिन्न अंग हैं जिनसे समाज तय होता है। कहा जाता है कि जिस प्रकार की संस्कृति व संस्कार किसी समाज में प्रचलित होंगे, उसी स्तर तक समाज सभ्य माना जाता है। हमारे समाज की संस्कृति व संस्कार वैश्विक मंच पर आदर्श स्थान पर रहे हैं। हमारी सामाजिक जीवनशैली को सबसे श्रेष्ठ व सभ्य माना जाता रहा है, लेकिन आधुनिकीकरण के प्रभाव ने कई संस्कृतियों के संस्कारों को बदल कर रख दिया है।

वर्तमान में समाज का अधिकांश वर्ग आधुनिकता की अंधी दौड़ में अपनी संस्कृति व संस्कारों को भुला चुका है। जहां त्योहारों व रीति–रिवाजों को सामूहिकता व अपनेपन की भावना तथा संस्कृति के एक हिस्से के रूप में मनाया जाता था, समाज में हर्षोल्लास व भातृभाव रहता था, आज उन्हीं त्योहारों पर बस सोशल मीडिया में बधाई के फोटो डालकर इतिश्री का प्रचलन बढ़ गया है। त्योहारों के अवसर पर जहां लोक संगीत व लोक संस्कृति का परिचय देखने को

Anju Kumari

मिलता था, वहां आज ऊंची आवाज में डी.जे. लगाकर इन त्यौहारों की औपचारिकताएं पूरी होती नजर आती हैं। हमारी संस्कृति में सहयोग का बड़ा महत्व था, हर सुख–दुख में साथ खड़े रहने की भावना देखने को मिलती थी, लेकिन आज समाज व लोग व्यक्तिवादी होते जा रहे हैं, केवल अपने में ही समाज को समझते हैं।

8. अध्ययन क्षेत्र :

वर्तमान शोध क्षेत्रीय अध्ययन पर आधारित है। दरभंगा जिला के बहेड़ी प्रखंड का चयन अध्ययन क्षेत्र के रूप में किया जायेगा। बहेड़ी प्रखंड के अन्तर्गत आने वाले सभी समाज़ एवं परिवार पर आधुनिकीकरण का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिल रहा है। अतः दरभंगा जिला के बहेड़ी प्रखंड का चयन औचित्यपूर्ण है।

9. अध्ययन पद्धति :

प्रस्तुत शोध विश्लेषणात्मक अनुसंधान प्ररचना पर आधारित है। निदर्शन पद्धति के आधार पर प्रतिनिधित्वपूर्ण, पर्याप्त एवं उद्देश्यमूलक निदर्श का चयन किया जायेगा। बहुस्तरीय निदर्शन पद्धति के आधार पर दरभंगा जिला के बहेड़ी प्रखंड के चार पंचायतों का चयन किया जाएगा। इन पंचायतों से स्तरित दैव निदर्शन पद्धति के आधार 300 उत्तरदाताओं का चयन किया जायेगा। प्राथमिक स्रोतों के रूप में साक्षात्कार अनुसूची, अवलोकन पद्धति तथा अन्य वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग किया जायेगा। द्वैतीयक स्रोत के आधार पर प्रामाणिक तथ्यों एवं आकड़ों का संकलन किया जायेगा। इंटरनेट, ई–मेल तथा कम्प्यूटर आदि के माध्यम से तथा उपलब्ध साहित्यों के द्वारा आंकड़ों का संचयन किया जाएगा। प्राथमिक तथा द्वैतीयक स्रोत के आधार पर प्राप्त तथ्यों का सांख्यिकीय पद्धति से सारणीकरण करके उनका वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाएगा तथा उसके पश्चात् निष्कर्ष प्रस्तुत किया जायेगा।

Anju kumari
29/02/2024

10. संभावित अध्ययन :

प्रथम अध्याय	:	विषय प्रवेश
द्वितीय अध्याय	:	संबंधित साहित्यों का सिंहावलोकन
तृतीय अध्याय	:	शोध पद्धतिशास्त्र
चतुर्थ अध्याय	:	उत्तरदाताओं की पृष्ठभूमि
पंचम अध्याय	:	परम्परागत सामाजिक परम्परा पर आधुनिकीकरण का प्रभाव
षष्ठ अध्याय	:	परम्परागत पारिवारिक रीति–रिवाजों पर आधुनिकीकरण का प्रभाव
सप्तम अध्याय	:	परम्परागत सामाजिक परम्परा एवं पारिवारिक रीति–रिवाजों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन
अष्टम अध्याय	:	सारांश एवं निष्कर्ष
प्रविष्टियाँ	:	संदर्भ ग्रन्थों की सूची, अनुसूची आदि।

11. संदर्भ :

1. सिंह, योगेन्द्र (2014) मार्डनाइजेशन ऑफ इंडियन ट्रेडिशन : ए सिस्टेमिक स्टडी ऑफ सोसल चेंज, थॉमसन प्रेस, पब्लिकेशन डिविजन, नई दिल्ली
2. गिडेन्स, एन्थोनी (1984) दि कॉन्सीक्वेन्सेज ऑफ मॉर्डनिटी, पॉलिटी प्रेस, यू.एस.ए.
3. जिन्सवर्ग, मोरिस (1921) दि साइकोलॉजी ऑफ सोसाइटी, फॉरगॉटन

Anju Kumari
29/02/2024

बुक्स, लंदन

4. सिंगर, मिल्टन (1972) व्हेन ए ग्रेट ट्रेडिशन मॉर्डनाइजेज : एन एनग्रोपॉलिजिकल एप्रोच टू इण्डियन सिविलाइजेशन, शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस, शिकागो
5. मैरियट, मैकिम (संपा0) (1955) विलेज इण्डिया, यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, शिकागो
6. अहमद, मेराज (1990) विकास का समाजशास्त्र, विश्व प्रकाशन, दिल्ली
7. गुप्ता, दिपांकर (2000) मिस्टेकेन मॉडर्निटी : इंडिया बिटविन वर्ल्ड्स, हार्पर कॉलिंस, नई दिल्ली
8. ब्लेक, सी. ई. (1966) दि डायनामिक्स ऑफ मॉडर्नाइजेशन : ए स्टडी इन कम्परेटिव हिस्ट्री, हार्पर एण्ड रो, न्यूयार्क
9. मूरे, विल्वर्ट (1963) सोशियल चेन्ज, प्रेन्टाइस हॉल, न्यूयार्क
10. कुमार, शरद (2014), भारतीय समाज, भारत पब्लिकेशन, लखनऊ
11. रुडोल्फ व रूडोल्फ (1967) द माडर्निटी ऑफ ट्रेडिशन : पॉलिटिकल डेवलपमेन्ट इन इंडिया, द यूनिवसिर्टी ऑफ शिकागो प्रेस, शिकागो
12. बनेडिक्स, आर. (2016) ट्रेडिशन एण्ड माडर्निटी रिकंसीडर्ड, कम्परेटिव स्टडीज इन सासोईटी एण्ड हिस्ट्री, वो0 – 9
13. लर्नर, डेनियल (1958) दि पासिंग ऑफ ट्रेडिशनल सोसाईटी : मॉर्डनाईजिंग दि मिडिल ईस्ट, फ्री प्रेस, न्यूयार्क
14. श्रीनिवास, एम. एन. (1963) सोशल चेंज इन मॉडर्न इण्ड़िया, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, बर्कले
15. शाह, बी.बी. (1971) प्रॉब्लम्स ऑफ मॉर्डनाईजेशन ऑफ एजुकेशन इन इण्डिया, इन ए0आर0 देसाई (संपा0), एसेज ऑन मॉर्डनाइजेशन ऑफ अण्डरडेवलप्ड सोसाइटीज, वो0–2

Anju Kumari
29/02/2024

16. देसाई, ए. आर. (1971) एसेज ऑन मॉडर्नाइजेशन ऑफ अन्डरडेवलप्ड सोसाईटीज, ठक्कर एण्ड कम्पनी, (वो0–1) बाम्बे

17. कॉनेल, जेम्स (1965) ए कन्सेप्ट ऑफ माडर्नाजेशन, साउथ अटलांटिक क्वाटरली, वो0 64

18. आइन्सनस्टेड, एस.एन.(1969) ''मॉडर्नाइजेशन प्रोटेस्ट एंड चेंज'' प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

19. श्रीवास्तव, सुशील (1990) आधुनिक भारत पर बदलते राम, इनकाउन्टर, वो0–2, नं0 2, सितम्बर

20. मिश्रा, मुकुंद (2012) पश्चिम बंगाल के पुरूलिया जिला में लोकसंस्कृति और आधुनिकीकरण, इंडियन एशियन जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज एण्ड हूमेनिटीज, वो0 2, इश्यू–3

21. श्रीनिवास, एम0 एन0 (1972) : कास्ट इन माडर्न इण्डिया एण्ड अदर एसेज, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बाम्बे

22. मिश्रा, एस. (2019) भारत में आधुनिकीकरण का प्रभाव, जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन, वो0 16, नं0 4

23. शुक्ला, सुनीता (2019) समाज पर आधुनिकीकरण का प्रभाव, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिव्यू रिसर्च इन सोशल साइंस, वो0 7, नं0 2

29/2/24
पर्यवेक्षक

Anju Kumari
29/02/2024
शोधार्थी